सर्व जिनालय अर्घ्य

उदकचंदनतन्दुलपुष्पकै चरू सुदीपसुधूपकलार्घ्यकै।
धवलमंगलगानरवरवाकुले जिनगृहे जिननाथमहं यजे ।।१।।

ॐ विदेहक्षेत्रकेविषै विद्यमान सीमन्धर स्वामी, युंगधर स्वामी, बाहुबली स्वामी, सुबाहु स्वामी आदि वीस विरहमान तिर्थंकर स्वामी, श्रीसम्मेद शिखरी वीस तीर्थंकर स्वामी, चम्पापुरी वासुपुज्य स्वामी, पावापुरी-महावीर स्वामी, गडगिरनार-नेमिश्वर स्वामी, कैलासगिरि- आदिनाथ स्वामी, बाहत्तर जिनालय अष्टापदकैलास अतीत अनागतवर्तमान तीनचोवीसी आठ करोड छप्पन लाख सत्याण्णव हजार चारसौ इक्यासी स्वर्णमय चैत्यालय, रत्नमयबिंब, जहां जहां भगवानकी प्रतिमा तहां तहां अर्घ्य निर्वपामीती स्वाहा।

मंगल आरती

मंगल आरती आतमराम, तनमंदिर मन उत्तमठाम। टेक

समरस जल चंदन आनंद तंदुल तत्वस्वरू पानंद।।

समयसार फ़द्नलनका माल, अनुभव सुख नेवज भरि थाल।

दीपक ज्ञान ध्यानकी धूप, निर्मल भाव महा फ़लरू प।।

सगुन भाविक जन इक रंगलीन, निहचे नौधा भक्ति प्रवीन।

धुनि उत्साहसु अनहतज्ञान, परमसमाधि नित परध्यान।।

बाहिर आमभाव बहावै, अंतर है परमातम ध्यावै।

साहिबसेवक भेद मिटाई द्यानत एक भेष होजाई।।